**"एक सुनिश्चित कार्यक्रम किसी भी कार्य की सफलता को सुनिश्चित करता है" इस कथन के आलोक में अध्यापक के लिये दैनिक पाठ योजना के महत्व पर चर्चा कीजिए।**

**A Planned programme in any activity ensures success". In the light of this statement discuss the importance of daily lesson plan for a teacher.**

पाठ योजना पाठ को पढानें से पूर्व की गई तैयारी और नियोजन की ओर संकेत करती है इस प्रकार की पूर्व तैयारी और नियोजन किसी भी कार्य को सही ढंग से करने के लिये आवश्यक होता है जिस कार्य को बिना सोचे समझे तथा यह तय किये हुए कि यह क्यों करना है कैसे करना है तथा किस किस को करना है, वैसे ही शुरू कर दिया जाता है, उसके सम्बन्ध में अच्छें परिणामों की आशा करना व्यर्थ ही है। इसीलियें किसी विषय विशेष पाठ को पढाकर उससे उचित लाभ प्राप्त करने की दृष्टि से यह आवश्यक हो जाता है कि अध्यापक कक्षा में जाने से पूर्व उसकी आवश्यक तैयारी पाठ योजना बनाकर कर ले। एक अध्यापक को पाठ योजना बनाना निम्न कारणों से लाभकारी होता है।

1. **उद्देश्य की स्पष्टता–** पाठ से सम्बन्धित अनुदेशनात्मक उद्देश्यों को पाठ योजना स्पष्ट रूप से अध्यापक के सामनें ला देती है। उद्देश्यों की स्पष्टता उसे सफलतापूर्वक आगे बढानें में काफी सहायक साधनों का उपयोग आदि सभी कार्य उन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर करने का प्रयत्न करता है तथा व्यर्थ इधर उधर की बातें कर समय नष्ट नही करता।
2. **बाल केन्द्रित शिक्षण–** आज के अध्यापक की मांग उसका बाल केन्द्रित होना है। पाठ योजना का निर्माण करते समय अध्यापक विद्यार्थियों के विषय और पाठ सम्बन्धी पूर्व ज्ञान, रूचियों तथा उनकी योग्यताओं आदि के बारें में अपनी पूरी तरह स्पष्ट धारणा बनाकर ही आगे बढता है। वह उनके पूर्व ज्ञान की परीक्षा कर यह देख लेता है कि जिस पाठ को पढाया जा रहा है, उसके ग्रहण करने हेतु बालकों में अपेक्षित योग्यता है या नहीं। बालकों की रूचि और योग्यताओं को आधार बनाकर उचित शिक्षण प्रदान करनें में इस तरह की पाठ योजना काफी सहायता कर सकती है।

Scanned with CamScanner

3. **उचित अभिप्रेरणा एवं रूचि उत्पन्न करना–** अभिप्रेरणा सफल अधिगम की कुंजी है बालकों को पाठ को पढानें की आवश्यकता का अनुभव कराना तथा उनमें उसके पढनें के प्रति पर्याप्त रूचि और उत्साह जाग्रत करना शिक्षण कार्य में सफलता के लिये काफी आवश्यक कार्य है। पाठ योजना अध्यापक की इस कार्य मे पूरी पूरी मदद करती है। पाठ कों ठीक प्रकार से प्रस्तावित कर बालकों को पाठ के पढने के प्रति अभिप्रेरित करने में तथा पाठ्य सामग्री पाठ्य विधि, शिक्षण सामग्री तथा क्रियाओं आदि के उचित चुनाव द्वारा एक अच्छी पाठ योजना छात्रों की रूचि को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में बराबर बनाए रखती है।

4. **विषय सामग्री का उपयुक्त चयन एवं संगठन–** एक पाठ योजना शिक्षण उद्देश्यों तथा बालकों की योग्यता तथा रूचियों को ध्यान में रखते हुए पढाये जाने वाले पाठ के लिये उपयुक्त विषय सामग्री के चुनाव का पूरा पूरा ध्यान रखती है। "सरल से कठिन की ओर" स्थूल से सूक्ष्म की ओर" तथा "क्रिया से सिद्धान्त की ओर" इन बातों का ध्यान रखकर पाठ्य वस्तु के उचित मनोवैज्ञानिक एवं क्रमिक संगठन मे पाठ योजना काफी सहायक होती है। पाठ योजना की सहायता से बालकों को पाठ से सम्बन्धित बातों का क्रमिक और व्यवस्थित ज्ञान करानें में अध्यापक को बहुत सुविधा हो जाती है।

5. **विषय वस्तु पर अधिकार–** पाठ योजना बनाते समय एक अध्यापक को पढाये जाने वाली विषय वस्तु को बार बार अपने सामने रखकर उचित योजना बनानी होती है विषय वस्तु के इस प्रकार दोहराये जाने से उसका उस पर अधिकार होना स्वाभाविक ही है।

6. **पाठ्य सामग्री के उचित प्रस्तुतीकरण में सहायक–** पाठ योजना के द्वारा इस बात का निर्णय पहले से ही लिया जाता है कि पाठ्य सामग्री के उचित प्रस्तुतीकरण में किस प्रकार की शिक्षण विधि उपयुक्त होगी, किस प्रकार की शिक्षण सामग्री और साधनों का उपयोग कब और कैसे किया जाएगा। इसी प्रकार की सभी बातों का पूर्व निर्धारण पाठ्य सामग्री के प्रभावपूर्ण प्रस्तुतीकरण में सहायक होता है।

7. **कक्षा समस्याओं के उचित हल में सहायक–** पाठ योजना के माध्यम से एक अध्यापक कक्षा शिक्षण में उत्पन्न होने वाली समस्याओं का पहलें से ही पूर्वानुमान लगाकार उनके समाधान सम्बन्धी उपाय सोच लेता है और इस तरह इन समस्याओं का सामना करने के लिये पहले से ही उचित तैयारी कर लेता है। ये समस्याएं सभी प्रकार की हो सकती है जैसे कक्षा का वातावरण अध्ययनमय बनानें की समस्या बैठनें का उचित प्रबन्ध आदि। पाठ योजना इन सबके उचित समाधान मे अध्यापक की पूरी पूरी मदद कर सकती है।

8. **अर्जित ज्ञान कों स्थायित्व प्रदान करनें में सहायक–** पाठ योजना योजना पाठ्य सामग्री के उचित प्रस्तुतीकरण में ही सहायक नहीं होती बल्कि यह सम्बन्धित अधिगम अनुभवों को विद्यार्थियों के मस्तिष्क में ठीक प्रकार बिठानें और उनका उपयोग कर सकनें में भी उचित सहायता प्रदान करनें का कार्य करती है। विषय वस्तु का उचित सारांश देने तथा पुनरावृति, अभ्याय कार्य तथा गृहकार्य आदि को ठीक ढंग से आयोजित करने के कार्य को भली भांति सम्पन्न करना अर्जित ज्ञान के स्पष्टीकरण में काफी सहायक सिद्ध हो सकता है।

9. **मूल्यांकन प्रक्रिया में सहायक–** मूल्यांकन शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का एक प्रमुख अंग है। एक अच्छी पाठ योजना इस प्रक्रिया से सम्बन्धित सभी कार्यो का उचित मूल्यांकन करनें में अध्यापक और विद्यार्थी दोनो को ही काफी सहायक सिद्ध होता है पाठ योजना में अनुदेशनात्मक उद्देश्यों को निर्मित करते समय, पाठ्य सामग्री तथा शिक्षण विधियों आदि का चुनाव करते समय विभिन्न पक्षों के मूल्यांकन पर उचित ध्यान रखा जाता है इन सभी में मूल्यांकन प्रक्रिया सहायक होती है।

10. **समय एवं शक्ति की बचत में सहायक–** जो कुछ अध्यापक तथा विद्यार्थियों को करना होता है वह पाठ योजना के माध्यम से अध्यापक के सामनें बिलकुल स्पष्ट रहता है इस तरह लक्ष्य और लक्ष्य प्राप्ति के

Scanned with CamScanner

लिये किए जाने वाले प्रयत्नों की पूर्ण स्पष्टता उन्हें निरूद्देश्य इधर–उधर भटकनें से बचाकर उनके समय और शक्ति के उचित उपयोग में पूरी तरह सहायक सिद्ध होती है।

11. **आत्मविश्वास की वृद्धि में सहायक–** आत्मविश्वास सफलता की कुंजी है जिस अध्यापक में अपने पाठ को ठीक प्रकार से पढानें हेतु उचित आत्मविश्वास नही होता वह कभी भी अपने शिक्षण के साथ पूरा न्याय नही कर सकता। पाठ योजना यहां अध्यापक का साथ देने के लिये आगे बढती है। अपने पाठ को पढायें जाने के सम्बन्ध में सभी बातों को ठीक प्रकार सोचनें और शिक्षण कार्य को उचित ढंग से नियोजित करनें से अध्यापक को जो कुछ भी कक्षा में करना है उसके लिये वह पहलें से ही न केवल मानसिक रूप से तैयार हो जाता है बल्कि शिक्षण कार्य को सम्पन्न करनें के लिये आत्मविश्वास के साथ कक्षा शिक्षण के लिये जाता है पाठ योजना द्वारा प्रदत्त इस प्रकार का आत्मविश्वास निःसन्देह उसकी सफलता में काफी सहायक सिद्ध हो सकता है।

**निष्कर्ष–** इस प्रकार पाठ योजना शिक्षण अधिगम कार्य की सफलता में सभी दृष्टि से सहयोगी सिद्ध होकर एक अध्यापक की उसके शिक्षण कार्य में पूरी पूरी मदद कर सकने का सामर्थ्य रखती है। एक अध्यापक जो कक्षा शिक्षण के लिये जाने से पूर्व पढायें जाने वाले पाठों की नियमित रूप से पाठ योजनाएं तैयार करता है और उन्हीं के अनुसार शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को एक निश्चित दिशा प्रदान करने का प्रयत्न करता है वह कभी भी अपने शिक्षण में असफलता का मुंह नही देख सकता। एक अच्छी पाठ योजना का निर्माण उसे कुशल नाविक की भांति सदा ही अपनी शिक्षण रूपी नौका को उद्देश्यों रूपी तट तक खेने में सफलता अर्जित कराता है इसीलिये सामाजिक अध्ययन के विषय को ठीक प्रकार पढानें हेतु सामाजिक अध्ययन के अध्यापक को सदैव ही उपयुक्त पाठ योजनाओं के निर्माण की और ध्यान देते रहना चाहिए। ताकि उसे कक्षा की गतिविधियों पर पूर्ण नियंत्रण रखते हुए सामाजिक अध्ययन शिक्षण के उद्देश्यों की प्रभावपूर्ण प्राप्ति में पूरी–पूरी सहायता मिल सके।

Scanned with CamScanner